ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 177-181
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

हिन्दी भाषा में आपूँजीवाद की लीला

अमर सिंह

शोध अध्येता– हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, सिंधू ब्लॉक, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोडा (केरल) भारत

Received-17.03.2024, Revised-23.03.2024, Accepted-28.03.2024 E-mail:singh8853amar@gmail.com

सारांशः *'कहना न होगा कि आज के समय में चाहे वह कथित शासन द्वारा हो या कथित बनुवा समाज द्वारा साथ ही किस प्रकार 'अबली' बुद्धियों में 'आबली व साबली' बुद्धियाँ घात लगाकर उनके अन्तः कहीं संवेदनशील रूप में तो कहीं महाक्लिष्ठपैनिया रूप में अपनी सत्ता स्थापित कर रहीं हैं और विश्व में जो जिस रूप में नहीं हैं, उसे हमारे सम्मुख 'मोड़' कर उस रूप में हमारे लिए उपस्थित व प्रस्तुत किया जा रहा है। यदपि आज 'पूँजी' शब्द के अर्थ से निगमित और बिंबित तथा उसके अन्तः आने वाली वस्तुयें, बिन्दु, पाठ व पदार्थ सबने हालाँकि यह अधिक–से अधिक व्यक्ति–समाज ही नहीं, बल्कि अन्य नभचर व थलचर प्राणी जिनका संबंध अब ही से नहीं प्राणों के सक्रीय होने की प्रारम्भिक प्रक्रिया से आने वाले समय तक जब तक प्राणितायें बनी रहेंगी पृथ्वी पर, तब तक मनुष्य से अन्य प्राणियों का अन्य प्राणियों का मनुष्य से कोई न कोई व कहीं न कहीं संबंध अवश्य रहा होने के कारण ने आज पूँजी के प्रति होने वाली परिभाषा ने अपने आकार में वृद्धि कर ली हैं, तब हमारे लिए और आने वाले युग के लिए बहुत ही दुर्बोध और जटिल युग की एक भनक के साथ दिखने वाली कल्पना है। आज प्रत्येक वस्तु पूँजी हो चली है, चाहे वह गोबर ही क्यों न हो।*

कुंजीभूत शब्द– कथित शासन, संवेदनशील रूप, महाक्लिष्ठपैनिया रूप, व्यक्ति–समाज, नभचर व थलचर प्राणी, प्रारम्भिक प्रक्रिया।

यह काम स्वतः ही नहीं हुआ है बल्कि पूँजी–इतिहास में चिन्हित वे पक्ष व रूप देखने में सामने आए हैं, जिनसे वर्तमान पूँजी–इतिहास की वास्तविकता को भविष्य के दर्पण में साफ–साफ देखा जा सकता है और इस साफ–साफ दिखने के अधिकाधिक आयामों ने पूँजी की परिभाषाओं में वृद्धि की। यदपि यह वृद्धि किसी खास व्यक्ति या उसके किसी खास करामात से निर्मित नहीं हुई है और न ही बल्कि कहें तो कह सकते हैं कि पूँजी की आवृति के रंग ने इसे हमारे सम्मुख किया है बल्कि आज पूँजी–व्याकरण की वास्तविकता के पूर्णतया हमारे सम्मुख आ जाने के कारण से यह अंधेरा साफ हुआ है। लिखा गया है कि "इसीलिए रिचर्ड बार्नेट का कहना है कि बहुराष्ट्रीय निगमों का आना धरती पर शांतिपूर्ण बँटवारा है। यह सर्वाधिक तर्क सम्मत शांतिपूर्ण बँटवारा है। धरती के श्रोत बाँट लिए गये हैं। निगमों द्वारा 'कौशल' पर जोर दिया जाता है, जबकि पुराना साम्राज्यवाद मर्दानगी (ताकत) पर जोर देता था।"[1] बहुराष्ट्रीय निगमों को यदि हम बहुवचन रूप में देखें व इस बहुवचन निगम की वास्तविक व्याकरणीयत को ठीक से समझें और यहाँ धरती के जो श्रोत बांटे गये उसके बारे में बहुत अधिक जो लेखक नहीं लिख सका या 'आपूंजी' के बारे में उसको जो बहुत जानकारी नहीं थी, इसलिए नहीं लिख गया या नहीं लिखा जा सका क्योंकि लेकिन भाषा में कही गई बात दूसरी बात से जुड़ने की शक्ति फेंकती रहती ऐसा देरीदा का मानना है और वह इसलिए स्थानत्रित होने कारण पकड़ में आ गई और बात साफ कर गई की यह बँटवारा किन–किन पदार्थों, वस्तु, संस्कृतियों, को पूँजी के रूप में हमारे सम्मुख लेकर उपस्थित हुआ है।

आज–युग में हमारे लिए प्रत्येक मनुष्य चाहे वह कितना ही साधारण ही क्यों न हो, प्रत्येक वस्तु व प्रत्येक तत्व सामाज के लिए नासमझीयायत, अज्ञानियों या वे जिन्हें इन तीनों के प्रयोग का कुछ खास परिचय नहीं है फिर भी वे हमारे लिए भले ही वह हमारी आँखों से कोई गिरता हुआ आँसू (मेलोड्रामा) ही क्यों न हो वह कोई कचराई पदार्थ ही क्यों न हो उससे भी हम कुछ न कुछ निर्मित ही कर लेते हैं उसका कहीं न कहीं प्रयोग कर लेते हैं, आप देखोगे दूसरे के आँसू देख लोग कविता बनाते हैं अर्थात इसलिए ये सब एक 'पूँजी' हो चलीं हैं।

मेरे लिए देशों के राष्ट्रपति, देशों के प्रधानमंत्री, देशों के भिखारी, देशों के व्यापारी, देशों के अभिनेता, कलाकार (राजीव गाँधी (पूर्व प्रधानमंत्री) इस लोकप्रिय कलाकार के फैन थे। जब वह प्रधानमंत्री बने तो एक बार जोशी जी को पत्र लिख कर आग्रह किया कि, 'वह कृपा करके राज्य सभा की सदस्यता स्वीकार कर लें' किन्तु आपादमस्तक संगीत में रमे और डूबे, पूर्णतया समर्पित उस अतुलनीय संगीतकार ने विनम्रतापूर्वक प्रधानमंत्री के सविनय अनुग्रह को टालते हुए कहा, 'मेरे लिए तो मेरे दो तानपूरे ही राज्यसभा और लोकसभा हैं, लिहाजा मुझे माफ करेंगे।'[2] (यह बात है संगीतकार भीमसेन जोशी की अर्थात ये सब) किस नियमावली में एक पूँजी की तरह हैं, जो कुछ तानपुरों से निकलता है वह सब एक पूँजी है हमारे आने वाले भविष्य के लिए जिससे लोग संगीत में कुछ सीखेंगें। देशों के पशु, देशों के जीव "इसी तरह दुनिया का दूसरे नम्बर का सबसे तेज धावक भी अपने अस्तित्व से किसी और के अस्तित्व की गवाही देता है। अमेरिकी हिरन प्रोंगहोर्न चीते के बाद दुनिया में सबसे तेज दौड़ने वाले जानवर हैं।"[3] चीता अपने आप में एक पूँजी हैं, लोग इनका व्यापार करते हैं भारत में अभी हाल ही में प्रधानमंत्री जी द्वारा विदेश से क्रय किए गए।

देशों के धर्म, देशों के देव, देशों के राक्षस और वह सब कुछ जो स्थानों–स्थानों में किसी भी नाम से तत्व के रूप में प्राप्त व उपस्थित है, पूँजीयां हैं। पूँजीयां अब केवल मील में कच्चे पदार्थ रूप में या अन्य औद्योगिक यंत्रों से निर्मित वस्तुयों तक सीमित नहीं रहीं बल्कि सारी वस्तुओं के पूँजी रूप में आ जाने के कारण वे सब "आपूंजी" के अंतर्गत समायोजित व अनुग्रहित कर ली गई हैं। इस प्रकार जब सम्पूर्ण विश्व में इनका व्याकरण व इतिहास बन चला है और बहुत अधिक व्यवहार में आने के कारण ये "आपूंजीवाद" के नाम से संबोधित होने को हैं या हो चली है, इसलिए अब बुद्धिजीवियों को चाहिये कि वे इसी वातावरण को इसी रूप में स्वीकार करें।

साथ ही 'पूँजी' का अर्थ मात्र धन संयोजित करने तक ही नहीं होता, बल्कि दूसरी पूंजियों का पता लगाने से भी है और यदि

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

पते में न आयें तो पूँजी का अर्थ 'प्राकृत निर्मिति' से भी है, अर्थात साथ साथ निर्मित करते चलते रहने से भी है, पूँजी की प्राकृत निर्मितियाँ भी आप देखेंगे क्योंकि यह बात प्राचीन समय से 'दबी', 'दाबी', 'दबाई' पड़ी रही है या बहुत अधिक विश्व में जनसंख्या के न होने के कारण अपनी वास्तविक स्थिति में सामने न लाईं जा सकी, किन्तु अब ऐसा नहीं है। पहले से बल्कि पूँजी के भी कई प्रकार हो सकते है जैसे 'यश,' अनीति, नैतिकता, संभोग, धन, भौतिकता, खोज, अनुसंधान, जीवन आदि। हालाँकि अब तक धन को ही मूल पूँजी का लक्ष्य माना जाता रहा, क्योंकि लोगों का यह मानना रहा कि यदि धन होगा तो सब प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन आज ऐसा नहीं है। धन पूँजी का अंतिम परिणाम होने के कारण सांप्रदायिकतायें अधिक रहीं, लेकिन "आपूंजी" की व्याकरणिक प्रक्रियों ने इस साम्प्रादायिक खेल की प्रक्रिया को थोड़ा साफ किया है।

खैर इधर जैसे कोई बड़ा व्यापारी या उद्धोगपति अपनी किसी वस्तु के विक्रय हेतु विज्ञापन देता है, उसका प्रचार करता है बड़ें से बड़ें अभिनेता या किसी ऊंचे दर्जे के नेता से, ठीक वैसे यदि हम देखें कि यहाँ 'धन' प्राप्ति के लिए जिससे धन भी प्राप्त होगा के लिए किस प्रकार की विज्ञापनिकता दी जाती है। यहाँ आप देखेंगे की युद्ध हमारे लिए पूँजी कैसे है? युद्ध का जितना अधिक विस्तार होगा 'धन' की पूँजी उतनी ही महान बन जाएगी। सनातन धर्म ने अपनी पूँजी के विस्तार के लिए कैसे 'योध्यता' की और उसे धन की प्राप्ति विशिष्ट तौर पर हुई होगी। शैलेंद्र प्रताप सिंह जी 'बुद्ध के बढ़ते कदम' पुस्तक में लिखते हैं कि "आर्यों का भारत–आगमन और वैदिक सभ्यता का प्रारम्भ ईसवीपूर्व द्वितीय सहस्त्राब्दी के मध्य में निर्धारित किया गया है,[2] किन्तु डॉ गोविंदचंद पाण्डेय के अनुसार उनका पदार्पण 1800 ईस्वीपूर्व के लगभग मानना युक्तिसंगत होगा।[3]

स्वात एवं कुभा (काबुल) नदियों के संगम पर बसे नगर पुष्कलावती (चारसद्दा) के असुर व्यापारी गांधार की स्वात, पजकोरा तथा अन्य उपत्यकाओं में रहनेवाली पहाड़ी पीतकेशी जातियों (आर्यों) की वस्तुएं लेकर बदले में उन्हें इच्छित वस्तुएं देते थे। पहाड़ी लोगों की शिकायत थी कि असुर उन्हें बहुत ठग रहे हैं। फलतः दोनों जातियों में छोटे–छोटे युद्धय होने लगे और अंततः असुरों व पीतकेशियों के मध्य विग्रह देवासुर–संग्राम का प्रारंब्भ हुआ, किन्तु असुर (नाग, दस्यु, दैत्य, आदि), जो देश के असल निवासी थे, पीतकेशियों के लंबे भालों तथा खडगों और उनकी अश्वारोहण–क्षमता के सामने देर तक नहीं ठहर सके। वे पीछे हटने लगे और धीरे–धीरे स्थिति यह आ गई कि गांधार व मद्र में बहुत कम असुर बचे रहे। गांधार से आगे की भूमि पर मद्रों का आधिपत्य हो गया और उससे आगे मल्लों ने अपना जनपद बनाया। सौवीर के दक्षिणी भाग में (कारांची के आस–पास) स्थित अंतिम दुर्ग की पराजय के साथ आर्य गांधार की सीमा पार कर सिंधु जनपद में प्रविष्ट हुए। सर जॉन मार्शल के अनुसार, आर्यों ने सिंध नदी के आसपास के नागरिकों को परास्त कर 1800 ई. पू. के आसपास अपना प्रभुत्व कायम किया।[4] बात और आगे बढ़ती चली गई लेकिन यहाँ यह कहना बस इतना ही पर्याप्त होगा कि जिस भी भूमि के बारे में बताया गया है क्या वह इतनी भूमि आज किसी एक व्यक्ति या व्यापारी के क्रय के बस में है उत्तर–नही? अर्थात यहाँ जो युद्ध के माध्यम से भूमि की प्राप्ति हुई, हम कह सकते हैं कि यह सब तरीका "आपूँजीयत" का है। ऐसे ही 'आपूंजी' के वातावरण की निर्मिति–व्याकरण को समझा, परखा व देखा जा सकता है।

अब समकालीन राजनीति में आप देखिये कि 'धर्म' कैसे पूँजी बन गया, "तो धर्म की कोई भी बात धंधे से अनिवार्यतया जुड़ी है।"[5] कहना न होगा कि जिस प्रकार के चरित्र का शासन हो और समाज के बड़े ठेकेदार जो समाज को उसी के चरित्र को केंद्र में रख कर समाज के परिप्रेक्ष को उसी चरित्र के रंग में शासन का आसमान बना रहे हों उसके विरुद्ध में वाया अधिक गहरे में जा कर जो मेरी ओर से उनके लिए एक 'बत्तमीजियात' जैसी बात होगी, बात नहीं करनी चाहिए, किन्तु मैं यहाँ उसके प्रतिरोध में नहीं बल्कि जब सब एक पूँजी है, सब 'अपनी–अपनी रोटी' के लिए कर्मरत हैं यहाँ तक की एक बूचर भी चिड़ीमारी करता है और उससे हुये धनार्जन से विद्यालय जिन्हें समकालीन समय के पूर्व तक एक मंदिर माना जाता रहा है, में अपने बच्चो की शुल्क देता है तो मैं इसे मात्र एक और अधिक समझनेवश यहाँ दो वाक्य उद्धृत कर रह हूँ। यहाँ यह भी ध्यान रहे कि धर्म का अर्थ अब मात्र ईश्वर की चरित्र पूर्ति को अपने में धारण करना या 'पोषणम तदनुग्रह' मात्र नहीं है बल्कि धर्म को अब सारे देशों में ईश्वरीय केंद्र में पूरे राष्ट्र को उसी चरित्र में ले रख रहे हैं कि भूमिका और परिभाषा में लेने की चेष्ठा अनुग्रहित की जा रही है और यह शायद ओट बैंक की नई ओट–बैंकिंग 'प्रक्रियाव' का 'खुला व्यापार' इस व्यापार को आम–फहम समाज नहीं समझता उसको लगता है कि वे 'महीश' की निर्मिति कर रहे हैं बल्कि यह 'धर्म पूँजी' को 'वितरित करने का शानदार खेल' है जिसके वातावरण का मुख खुला है। क्योंकि समाज के अन्तः बन बिगड़ रहे रंगों को कभी झाँपा–मूँदा नहीं जा सकता। यह इन लोगों को नहीं पता और ऐसे लोगों के लिए धर्म, ईश्वर एक पूँजी बन गये। इसी से लोग कमाते खाते हैं।

भारत में 'नरेंद्र मोदी समाज' के लिए 'धर्म' एक पूँजी है, जैसे की वे माने जाते हैं कि वे एक व्यापारी समुदाय व भू–भाग से जुड़े हुये व्यक्ति हैं और वे देश और विश्व के एक परिचित प्रधानमंत्री बन सके हैं। धर्म को पूँजी बनाने कि यह इनकी कला या कमजोरी नहीं है बल्कि पीछे से पूँजी की वातावरणीयत–इतिहास ने अपने परिवेश के साथ सारी वस्तुओं को साथ ले लिए जाने की प्रभाविता है, जिसका मुख्य कारण जनसंख्या के अधिक बढ़ने और काम तथा पूँजी की खोज व विश्व में 'महानमानी' स्थिति उपस्थित करने से है जिसमें प्रत्येक देश के शीर्षजन लगे हुये हैं, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और देश के अन्तः विदमान राजनीति में भेद करते हुये ही वैश्विकता के शीर्ष स्थान पर पहुंचा जा सकता है। जैसे कि कहा जाता है कि "वर्तमान समाज में सामाजिक नियंत्रण की महत्ता कई प्रकार से है। सामाजिक नियंत्रण के जरिये ही सामाजिक व्यवहार में समानता की स्थापना की जाती है।"[6] आप तय मानिए की सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन बनाए रखना और बनाना युग बदलने के समान है यह इतनी सरल प्रक्रिया नहीं है अर्थात 'धर्म' को पूँजी बनाना इतना सरल कार्य नहीं है और जब तक इसे कि यह एक पूँजी है लोगों को पता चलेगा 'धर्म–वस्तु' का पूर्णतया लाभ उठा लिया जाएगा और पुनः इसे दूसरे रूप में उगाया जाएगा जिसकी पुनः किसी को कोई भनक नहीं लगने–लगाने दी जाएगी।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

'धर्म–वस्तु' पूँजी है इसमें धर्म के अकेले का कोई दोष नहीं, बल्कि जिन्होंने समाज और धर्म की पहले पहल कल्पना की होगी त्रुटि उनसे हुई थी। वह त्रुटि क्या थी, ईश्वर को धर्म से जोड़ देने की या धर्म को ईश्वर से जोड़ देने की यदि ईश्वर को धर्म से भिन्न रखा गया होता तो धर्म कभी भी इतनी बड़ी पूँजी न बनता बल्कि वह तिनके के समान या फटे हुये कपड़ें की भांति एकांत तत्व होता जो मात्र गिनती भर का होता हालांकि 'आपूंजी' से बाहर नहीं होता। फिलहाल जैसे कि मैंने कहा यहाँ व्यक्ति–व्यक्ति पूँजी है जो जो अपनी पूँजी को पहचान सक रहा है वही विशेष होता जा रहा है। हालांकि यह काम भारत में हिंदुओं के आने से लेकर इस्लाम के मध्यम रूप में औरंगजेब और आज 'मोदी समाज' के परिदृश्य वाया समकालीन राजनीति में अधिकाधिक दिखाई देता है। ऐसे ही यदि हम बुद्ध को देखें तो 'आपूजितता' स्पष्ट होती हैं, कहना न होगा कि "सोवियत सत्ता के विघटन के कुछ वर्षों बाद मिखाइल गोर्बाचोव ने एक इंटरव्यू में कहा था कि "21वीं सदी बुद्ध की सदी होगी" मैं नहीं जानता, यह वक्तव्य उन्होंने किस आंतरिक प्रेरणा के चलते दिया था।"7 सोवियत संघ के विघटित होते ही संसार की वास्तविकतायेँ अब तक जो बनाई गई थीं वे केवल एक बच्चों जैसे बुद्धि का खेल लगेंगी और 'आपूंजीवाद' के समझी–व्याकरण में यह तो होना ही था। सोवियता के विखंडित होते ही सांप्रदायिकता बढ़ेगी और आम लोग पुनः शांति की इच्छा की खोज करेंगे। जैसे इनके बारे में धारणा है कि वे एक त्यागी पुरुष हैं, किन्तु बहुत कम लोग यह समझ सकते हैं कि जैसे मैंने पहले ही कहा बुद्ध के लिए 'यश' ही उसकी पूँजी है और शांति उसकी शक्ति व सिद्धांत या ईश्वर? अर्थात यश और शांति भी एक 'पूँजी' है।

अब हम देखेंगे कि बड़े से बड़ा और सादे से सादा व्यक्ति किस प्रकार एक 'पूँजी' बन चला है "रिकार्डो ने वस्तुओं की उत्पादन लागत की गणना मुद्रा में न करते हुये अकुशल श्रमिक के श्रम दिनों के रूप में की है। उत्पादन व्यय पर विचार न करते हुये उन्होंने केवल श्रम के रूप में व्यस्त वास्तविक लागत पर ही विचार किया। उनके अनुसार की वस्तु के उत्पादन में लगी हुई श्रम के मात्रा ही उस वस्तु का सापेक्षित मूल्य का निर्धारण करती है और तुलनात्मक लागत ज्ञात करने के लिए उन्होंने कई मान्यताओं का सहारा लिया है।"8 डॉ रीता माथुर ने यहाँ बात रिकार्डो की नहीं चलने दी अन्यथा यह स्पष्ट हो जाता कि मजदूर किस तरह एक पूँजी है। फिर आगे हम बढ़ते हुये जिसमें देव और असुर भी सम्मिलित हैं। संसार में मजदूर वर्ग की संख्या कम नहीं है और मैं यदि अपने मानी में कहूँ तो कह सकता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति मजदूर ही है, यहाँ तक असीमित धन रखने 'रखाने' वाले लोग भी, यहीं ध्यान रहे वही सबसे अधिक समय तक अपने काम में लगे रहने वाले मजदूर है क्योंकि उनसे अधिक 'व्यवस्था' अपने काम को कोई नहीं देता हालांकि जिन्हें हम मजदूर कहते हैं, वे तो कुछ समय के लिए, कुछ धन के लिए आते हैं। यह स्थिति ऐसी ही होती है जैसे पुराने समय में जमींदार अपने खेत की सही बुआई परख रखता था, उसे सदैव एक चिंता थी, अर्थात समय देना ही सबसे बड़ी मजदूरी है। ऊंची धनकृषितायी करने वाले लोग सबसे अधिक ऊर्जा निम्न स्तर के मजदूर से प्राप्त करते हैं तब वे एक बड़ी ऊर्जा का संश्लेषण कर पाते हैं। यहाँ यदि नीचे से इन्हें ऊर्जा न मिले तो तय मानिए की एक बड़ी ऊर्जा का संश्लेषण करना असंभव हो जाएगा। हालांकि बड़ी ऊर्जा छोटे लोगों के हित में है किन्तु वितरित रूप में और उचित भर, लेकिन मेरा जो विषय उसमें यह सम्मिलित है कि कि व्यक्ति 'पूँजी' कैसे है। जिसे मैंने ऊपर दिखाया।

अब हम देखेंगें कि कोई 'विटमिन' हमारे लिए पूँजी कैसे है। "पृथ्वी के गर्व में स्थित ताप का उपयोग करके तापीय या विद्धुत ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है। इस ऊर्जा को भूतापीय ऊर्जा कहा जाता है। यह ऊर्जा प्रथवी के अंदर स्थित गरम चट्टानों, पानी आदि में स्थित तापमान के कारण उत्पन्न अधिक तापमान व पृथ्वी की साथ पर स्थित अपेक्षाकृत कम तापके बीच अन्तर का इस्तेमाल करके प्राप्त की जा सकती है। इस तापमान में अन्तर का सेधे भी प्रयोग किया जा सकता है तथा इसका प्रयोग करके यांत्रिक या विद्धुत ऊर्जा भी तैयार की जा सकती है।"9 उसे किस क्रिया विधि से पूँजी बनाया जा रहा है, 'ऊर्जार' अर्थात सम्पूर्ण पृथ्वी सूरज सहित जहाँ से हमें ऊर्जा मिलती है इसे मैं एक नियम में IQ–3 मान लेता हूँ जहां सारी ऊर्जा विदमान है जिसे एक प्रकार सामयिक आर्थिकी में कहें तो कह सकते हैं कि 'यूरो ही ऊर्जा है ऊर्जा ही यूरो' इन दोनों का मजदूर और यंत्रवत ऊर्जा प्रक्रिया में 'फिल्ट्रेशन' होता रहता है या किया कराया जाता रहता है। ऊर्जार की जानकारी केवल कुछ ऊर्जारमोही दार्शनिकों (IQ–3) को होती है जिसमें ज्ञानसंत सम्मिलित हैं। भौतिकमोही अर्थात 'IQ–2, 'लोगों को है जिसमें शासक, भौतिकशास्त्री नेता तथा ऊंचे दर्जे के जीववैज्ञानिक सामिल हैं, ही इसका उपयोग करना जानते हैं अन्य में जिनमें व्यापारी वर्ग है जो इनका उपयोग कराता है। उपयोग कराने की प्रक्रिया ही सबसे विशिष्ट है, यह प्रक्रिया कभी कभी शासनिकता को भी दिशा व अभिशप्तता के साथ चलाने व अन्याय को भी न्याय का रूप देती, दिवाती रहती है। अब हम परिचित होंगे सामाजिकमोही जिन्हें 'IQ–1' के नाम से संबोधित किया जा सकता है। इन्हें 'ऊर्जार' (IQ–3) और भौतिकतायी (IQ–2) के बारे में कोई अधिक या सामान्य तक की भी जानकारी भी नहीं होती यही वह मजदूर वर्ग है जिसे कम संज्ञानिकता के कारण अपने शिशु तक से मोह होता है अन्य कई जीव जन्तु, वस्तुओं आदि से मोह होता है इनमें सरकारी नौकर तथा किसान आदि वनमानव आदि सामिलित है। लेकिन कहीं न कहीं वनमानव भी हमारे काम के हैं सेना में आदिवासी विशेषताएँ को मान्यता प्राप्त है उनके चरित्र को जगह मिली हुई है और लगातार मिल रही है। इसलिए वह भी स्वयं में एक पूँजी हैं, मजदूर जिससे बल मिलता है वे अपने बल और काम से जीवन व्यतीत करते हैं। वे भी पूँजी हैं। साथ ही जो सारे संसार के लोंगो को वस्तुएं समूल्य वितरित करते हैं वे भी हमारे लिए एक पूँजी हैं और स्वयं में भी, और ऐसे ही अन्य भी।

बात यदि विटमिन की करे तो ऊर्जार से भौतिकमोही एक विटमिन की परख करते हैं, और समाजमोहियों के बीच उसे कई विज्ञापनों के माध्यम से उसके अन्य विटमिन रूप देकर उनका विक्रय करते हैं, इस लिए कोई भी विटमिन हमारे लिए एक पूँजी होने के साथ–साथ इनके वितरण–निर्मिति की प्रक्रिया हमारे लिए एक 'आपूंजी' है।

इधर शिक्षा, हारी चुनावी पार्टियां, पुस्तकों का लिखा जाना, सिद्धांतों का बनाया जाना, उन्हें समाज में लागू करना, जलवन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

(समुन्द्र) "हर दिन धरती से न जाने कितना पानी वाष्प बनकर बादलों में तब्दील हो जाता है। फिर यही बादल धरती पर बरसते रहते हैं। इनका पानी नदियों और तालाबों में भर जाता है। वही पानी फिर से समुंदरों में जाकर जमा हो जाता है। फिए से हर दिन पानी वाष्प बनकर बादलों में जमा हो जाता है। फिर से धरती पर प्यार उमड़ने–घुमड़ने लगता है। धरती, पानी, वाष्प, बादलों, नदियों, और समुन्दरों का यह जीवन चक्र है। यह चक्र कहीं से टूटता नहीं है। यहाँ पर सभी अपनी भूमिका पूरी मुस्तैदी से अदा करते हैं। सोचिए, क्या हो अगर कोई बीच की कड़ी गायब हो जाय तो। यह पूरा का पूरा तंत्र ही बाधित हो जायेगा।"[10] आदि इधर प्रेम करना भी एक पूँजी के समान समझ पड़ा है, क्योंकि इसकी प्रक्रिया बहुतों को अपनी वास्तविक भौतिकीय स्थिति से शीर्ष वास्तविक भौतिकीय स्थिति पर पहुंचा देती है। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है जैसे भारत के महान उद्धोगपति मुकेश अंबानी को प्रेम हुआ था नीता अंबानी से और इस प्रक्रिया को पूर्ण करते हुये 'नीता दलाल' नीता अंबानी बन गयी यह पूँजी आज समाज में बहुत विशिष्ट होती जा रही है ऐसे ही भारत के त्रेता युग में रामचन्द्र जी को सीता जी से प्रेम हुआ था। वे ईश्वर की श्रेणी में आने लगीं ऐसे ही राधा जी भी, लिखा जाता है कि हिन्दी और अँग्रेजी के कई उपन्यासों में ऐसी ही पात्रितायें दिखायीं गईं जो प्रेम की पूँजी से उच्च स्थान पर पहुँचीं हैं और इधर तो "नया विज्ञान , नई तकनीक, नई शिक्षा, नए विचार जियातन देते हैं उससे अधिक नई समस्याएँ पैदा करते हैं। विकास करते हैं तो प्रदूषण होता है। शुद्ध तर्कवाद ने परंपरा और मिथक या तो इतिहास (डाक्यूमेंटेशन) बन जाते हैं या त्याज्य हो आते हैं, तर्कवाद, व्यवस्थान (रेशनलिजेशन), उत्पादकता, निजता, स्पर्धा अंततः सबको पूँजी का दास बना डालते हैं।"[11] और इधर अथाह ऐसा ही हो रहा है।

साथ ही साथ इधर सामाजिक तकनीकि और भौतिक तकनीकि भी दो नए सामाजिक उपलब्धि–मूल्य जिनमें यूनेस्को, नाटो, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, चाइना नीति, अमेरिकीय समझ, विश्वात्मक सौन्दर्य, सैनिकीय लड़ाकू बल, आतंकी संगठन, गरीब देश, रूस का भूमिक–क्षेत्रफल, सीमा–विवाद, अराजक बुद्धि, सेक्स, अस्वस्थता, वस्तुमांग, शांति, अशिक्षा, शिक्षा, दर्शन व लेखन "लगभग पच्चीस वर्ष के अनवरत परिश्रम के बाद १६ अगस्त १८६७ की रात को दो बजे "पूँजी" (प्रथम खंड) के आखिरी फार्म का प्रूफ देखकर मार्क्स ने एंगेल्स को यह पत्र लिखा था :

"प्यारे फ्रेंड, – किताब का आखिरी (४६वाँ) फार्म देख कर अभी रखा है। परिशिष्ठ दृ मूल्य का रूप दृ छोटे अक्षरों में सवा फार्म (शीट) में आया है।

"भूमिका भी यथावत ठीक कर दी और कल भेज दी। तो यह खंड हो गया। यह केवल तुम्हारे कारण संभव हुआ है। मेरे लिए तुमने जो आत्म–त्याग किया है, उसके बिना तीनों खंडों के लिए विशाल कारी मैं कभी न पूरा कर सकता। मैं तुम्हें बार–बार धन्यवाद देते हुये गले लगाता हूँ। "साथ में ठीक किए हुये दो फार्मों के प्रूफ हैं। "पंद्रह पाउंड हार्दिक धन्यवाद के साथ प्राप्त। "नमस्कार प्रिय मित्र, मेरे अति प्रिय मित्र!"[12] यहाँ यथावत दिखता है कि मार्क्स के लिए पाउंड महत्वपूर्ण हैं, अर्थात लेखन और दर्शन भी एक पूँजी हैं। सौन्दर्य " मोनिका नामक एक युवती एक विश्वप्रसिद्ध उद्धोगपति की नौकरी करती थी। एक दिन वह मालिक के बारबीक्युग्रिल की सफाई में लगी हुई थी। सफाई के काम में लगी हुई मोनिका को लगा कि मालिक उसे देख रहा है। पता नहीं कि उसका मकसद क्या है। दूसरे दिन थोड़ा सजधजकर ही वह काम पर आई। मालिक उसकी तरफ ही देख रह है जैसे अनशन के बाद कोई खाने की चीजों की तरफ देखता है। वृद्ध, विधुर और अमीर व्यक्ति की इस हरकत ने मोनिका को हर्ष पुलकित किया मानो कई लाटरियाँ एक साथ लग गई हों। दूसरे दिन मालिक ने हाउस कीपर को बुलाया और आदेश दिया कि मोनिका को चेम्बर मेयड के रूप में तरक्की दे दी जाय। उसने मौके का फायदा उठाया। उसने सब जगह झाड–पोछकर सफाई की। बीच में गलत स्थानों को पोंछ लिया और उस करोड़पति को अपने वश में किया। हाउसकीपर और फैमिली वकील ने मालिक को सचेत किया सचेत किया। लेकिन बूढ़े ने बात को उड़ा आ दिया। वह 'वृद्ध प्रेम' के बहाव में डूब चुका था।"[13] सौंदर्य संसार की एक ऐसी पूँजी बनती जा रही है जिससे रोडपति चंद दिनों में करोड़पति होते जा रहे हैं। मोनिका के साथ अंत में ऐसा ही हुआ। सड़क–निर्माण, चोरी, चुनाव, नेतागीरी अपराध आदि। अपराध समाज के परिष्कार के लिए अत्यंत आवश्यक है समाज को परिष्कृत करने के किए स्वयं में एक पूँजी है। यदि अपराध समाप्त हो जायें तो समाज को परिष्कृ त नहीं किया जा सकता हैं। इधर 'घटना' जितनी बड़ी होगी टी. आर. पी. उतनी ही अधिक होगी। देखिये "न्यूज चौनल महानगरों, बड़े और मझोले शहरों की खबरों को प्रमुखता से दिखते हैं, जबकि ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में घटने वाली घटनाएं उनके लिए विशेष महत्व नहीं रखतीं। इसकी मुख्य वजह यही है कि टैम द्वारा पीपल्स मीटर बड़े शहरों में ही लगाये गये हैं और जब वाहन के दर्शक देखेंगे, तभी टीआरपी में इजाफा होगा।"[14] घटना भी एक पूँजी बन चली है घटनाओं का होना आवशयक है। आगे – हाँ एक उदाहरण देना आवश्यक समझ के लिए अनावश्यक न होगा देखिये "आधुनिकता एक ऐतिहासिक मूल्यबोध और वातावरण के रूप में विज्ञान, योजना, सैक्युलरिज्म और प्रगति केंद्र जैसे विशेषणों को अर्थ देती रही है, उत्तर–आधुनिकता इसके सीमांतों का नाम है। इसलिए विज्ञान के मुकाबले अनुभव की वापसी, योजना की जगह बाजार की वापसी सैक्युलरिज्म की जगह धार्मिक पहचानवादी, जातिवादी, स्त्रीवादी उपकेन्द्रों की वापसी और मनुष्य–केन्द्रित प्रगति की जगह प्रकृति–केन्द्रित विकास के बीच लगातार बहस जारी है।"[15] बात यहाँ उत्तर–आधुनिकता को समझने की हो रही है, लेकिन विचारों से विचार कैसे बनते और मिलते हैं या उपजाए जाते है या उपजते रहते हैं। यहाँ देखने योग्य बात जैसे लेखक ने लिखा 'विज्ञान के स्थान पर अनुभव की वापसी', क्योंकि इसी से वास्तविकता पकड़ी जा सकती है, और पूँजी के व्याकरण को समझा जा सकता है। इस लिए अब चेतना और अनुभव महत्त्वपूर्ण हो चले हैं और योजना के स्थान पर बाजार वापसी महत्वपूर्ण हो चली है। ये दोनों बाते हमें यह अनुभाव देती चलती हैं कि जनसंख्या के अधिक होने से बहुत सी वस्तुएं, बातें एक पूँजी हो चली हैं। "यूरोपीय बौद्धिक जगत में आजकल इस बात का अहसास बढ़ चला है कि आधुनिकता की महान सभ्यतावादी योजना में कुछ भीतरी बीमारियाँ हैं और वह अहसास तब बढ़ा है, जब आधुनिकता के तमाम किले फतह कर लिए गए हैं, पूँजीवाद

साम्राज्यवादी चरण से आगे निकल कर 'वृद्ध–पूँजीवाद' (लेट कैपीटलिज्म) में बदल गया है।[16] मेरा अनुभव कहता है कि यदि लेखक के मन में पूँजीवाद पर खुले रूप में कुछ और बोलना होता तो वह यह अवश्य कहता कि 'उसी वृद्ध–पूँजी की प्रक्रिया ने संसार को आपूंजीवाद के 'चारित्रिकचाल' में फांस लिया है' लेकिन लेखक आधा कह कर चुप रहा, इस लिए संसार में जो भी कुछ हो रहा है, वह सब 'आपूंजीवाद की लीला' है। यहाँ तक कि "अब तक हम 'साझापन', 'एकता' और 'भाईचारे' के जिस वातावरण के केंद्र में रहते आए हैं वह भी पूँजीवादी ही था"[17] हालांकि आगे भी बहुत कुच्छ लिखा गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पचौरी, सुधीश, प्रथम संस्करण – 2000, आलोचना से आगे, राधाकृष्ण प्रकशन, नई दिल्ली, पृ. 63.
2. सिंह, गजेन्द्र नारायण, प्रथम संस्करण – 2016, कालजयी सुर पंडित भीमसेन जोशी, वाणी प्रकशन, नई दिल्ली, पृ. 13.
3. संजय, कबीर प्रथम संस्करण – 2020, चीता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 14.
4. सिंह, शैलेंद्र प्रताप, प्रथम संस्करण – 2012, बुद्ध के बढ़ते कदम, वाणी प्रकशन, नई दिल्ली, पृ. 15.
5. पचौरी, सुधीश, प्रथम संस्करण – 2002, आवृति 2023, हिन्दुत्व और उत्तर–आधुनिकता, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 69.
6. सिंह, शशि भूषण, प्रथम संस्करण – 2012, समाज के नियंत्रण, अर्जुन पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली, पृ. 1.
7. सिंह, शैलेंद्र प्रताप, प्रथम संस्करण – 2012, बुद्ध के बढ़ते कदम, वाणी प्रकशन, नई दिल्ली, पृ .15.
8. माथुर, डॉ० रीता, प्रथम संस्करण – 2012, अन्तरराष्ट्रीय प्रबन्ध, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ. 98.
9. मिश्र, विनोद कुमार, प्रथम संस्करण – 2017, अक्षय ऊर्जा श्रोत, भारतीय पुस्तक परिषद, नई दिल्ली, पृ. 53.
10. संजय, कबीर, प्रथम संस्करण – 2020, चीता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 25.
11. पचौरी, सुधीश, प्रथम संस्करण – 2000, आलोचना से आगे, राधाकृष्ण प्रकशन, नई दिल्ली, पृ.15.
12. शर्मा, डॉ० रामविलास, प्रथम संस्करण – 1956, आवृति 2017, मानव सभ्यता का विकास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 136.
13. अनुवादक – अरविन्दाक्षन डॉ, जोसफ, डॉ० पोल्सन, संस्करण – 2003, अमेरिका : एक अद्भुत दुनिया, , जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, पृ. 134, 135.
14. कुमार, डॉ० मुकेश, प्रथम संस्करण दृ 2015, टीआरपी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 103.
15. पचौरी, सुधीश, प्रथम संस्करण – 2000, आलोचना से आगे, राधाकृष्ण प्रकशन, नई दिल्ली, पृ. 9.
16. वही पृ. 13.
17. पचौरी, सुधीश, प्रथम संस्करण दृ 2002, आवृति 2023, हिन्दुत्व और उत्तर–आधुनिकता, राधाकृष्ण प्रकशन, दिल्ली, पृ. 118.

*****